B.A.II, Paper-4
Systems of Psychology
Contribution of Tolman

Ques:- Explain the contribution of Tolman as a Neo-Behaviourist or Later Behaviourist.

नवीन व्यवहारवादी के रूप में टॉलमैन के योगदानों का वर्णन करें।

Ans:- Neo-Behaviourist में Tolman का नाम प्रमुख है। उन्होंने अपने को कभी-कभी प्रयोजनमय (Purposive) व्यवहारवादी कहा है। कुछ लोगों को उनके व्यवहारवादी होने पर संदेह है परन्तु इसमें शक नहीं कि उन्होंने अपनी पशु प्रयोगशाला में जिन पद्धतियों का प्रयोग किया वे व्यवहारवादी पद्धतियाँ थीं, और व्यवहारवादी पद्धतियों से ही पशु व्यवहार की व्याख्या की। Tolman ने कुछ बातों में Watson की तीव्र आलोचना की है। Watson किसी भी प्रकार के प्रयोजन के विरुद्ध था। Tolman ने व्यवहार में वस्तु-विषयक प्रयोजन का संकेत किया है। Tolman के अनुसार Watson ने दो प्रकार के व्यवहारों में अन्तर नहीं किया है जो उसे करना चाहिए था। एक ओर तो व्यवहार शारीरिक क्रियाओं के रूप में होता है परन्तु दूसरी ओर वह इन क्रियाओं से अलग भी होता है। केवल शारीरिक क्रियाओं के रूप में किसी व्यवहार की व्याख्या पर्याप्त नहीं है। शारीरिक क्रियाओं के अतिरिक्त भी व्यवहार का अपना पहलू होता है। Tolman के अनुसार प्रयत्न और भूल सीखने के प्रयोगों में पशुओं के व्यवहार में प्रयोजन स्पष्ट देखा जा सकता है। प्रयत्न और भूल होते ही इसलिए है कि उसमें एक लक्ष्य (goal) तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है। वास्तव में, Tolman ने व्यवहारवाद के क्षेत्र को Watson से अधिक विस्तृत कर दिया। वह अन्य व्यवहारवादियों से अधिक उदार थे। उनके अनुसार प्रत्येक ऐसा अनुसंधान कार्य व्यवहारवाद में माना चाहिए जिसमें वस्तु-विषयक विधियों से और वस्तु-विषयक प्रयत्नों से कार्य किया गया है। Tolman ने मध्यवर्ती चरों (intervening variables) का प्रत्यय स्पष्ट रूप से उपस्थित किया। एक व्यवहारवादी के रूप में Tolman प्राचीन और नवीन सभी प्रकार के सापेक्षवाद के विरोध में था। Watson के उत्तेजना-अनुक्रिया (S-R) के सिद्धान्त के स्थान पर Tolman ने उत्तेजना-जीव-अनुक्रिया (S-O-R) का सिद्धान्त उपस्थित किया। बेशक Tolman का सिद्धान्त नवीन व्यवहारवाद का प्रतिनिधि सिद्धान्त है।

Scanned with CamScanner

प्रयोजनपूर्ण Purposive Behaviour in Animal and Men में Tolman ने बताया कि प्रत्येक व्यवहार उद्देश्यपूर्ण होता है। व्यवहार के अध्ययन में उन्होंने दूसरा तथ्य प्रकट किया कि प्रत्येक मानव के व्यवहार वातावरण में अधिक उपयोगी होते हैं। प्राणी और वातावरण के सम्बन्ध बनाने का प्रयास व्यवहार के अध्ययन हेतु आवश्यक है। जब प्राणी किसी कार्य को करता है और उसकी क्रियाएं संगठित नहीं होती हैं, वे उद्देश्यमुखी (goal oriented) होती हैं। ये उद्देश्यमुखी कार्य ही Tolman के अनुसार व्यवहार की इकाई (molar) है, क्योंकि उद्देश्योन्मुखी कार्य का विभाजन सम्भव नहीं है। वाटसन ने अपनी व्याख्या में विश्लेषण पर अधिक बल दिया, जबकि Tolman ने व्यवहार की समग्रता पर अधिक बल दिया।

Tolman ने मनोविज्ञान को कई नए तथ्य प्रदान किए। इन तथ्यों में सर्वप्रथम Tolman ने (Independent variable) स्वतंत्र चर का उल्लेख किया। Tolman ने कहा कि हम उन कारणों को ज्ञात कर सकते हैं जो व्यवहार का निर्माण करने के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने व्यवहार निर्माण के पाँच कारणों का उल्लेख किया —

(i) वातावरण उद्दीपक (Environmental stimuli) — S
(ii) जैविकी (P)
(iii) वंशानुक्रम (H)
(iv) पूर्व प्रशिक्षण (T)
(v) आयु (A)

इस प्रकार Tolman ने व्यवहार को इन पाँच कारणों का कार्य माना तथा इसे निम्न सूत्र में व्यक्त किया —

$$B = f_1 (S, P, H, T, A)$$

Tolman ने उक्त सूत्र 1932 में प्राप्त किया किन्तु बाद के प्रयोगों के निष्कर्ष के फलस्वरूप इसे बदलना पड़ा। इन परिवर्तित कारणों को Tolman ने दो भागों में विभक्त किया। प्रथम भाग में व्यक्ति विभिन्नताएं, वंशानुक्रम, प्रशिक्षण तथा भोजन तत्व को रखा। दूसरे भाग को एक सूत्र (1980) द्वारा प्रदर्शित किया और इसमें जटिल प्रेरक, व्यवहार इत्यादि को शामिल किया

स्वतन्त्र चर के अतिरिक्त Tolman ने Dependent variable (परतन्त्र चर/आश्रित चर) का भी उल्लेख किया। स्वतंत्र चर के फलस्वरूप जो व्यवहार होता है उसे ही Tolman ने 'आश्रित चर' के नाम से पुकारा। आश्रित चर में ऐसे व्यवहार को ही शामिल किया जाता है जिसका निरीक्षण संभव है। इस परिणाम को 'व्यवहार चर' भी कहा जाता है।

Tolman ने सर्वप्रथम 'मध्यस्थ चर' (Intervening variable मध्यवर्ती चर) की विवेचना की। किसी प्रयोग में उद्दीपक तथा प्रतिचार के मध्य जो प्रभावक तत्व परिवर्तनशील होते हैं, उन्हें मध्यवर्ति चर कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, व्यवहार-विकृति तथा अन्य कारणों का कार्य होता है। इस प्रकार स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर के मध्य मध्यवर्ति चर होता है। व्यवहार का ज्ञान प्राप्त करने के लिए परिस्थिति का चर और वंश परम्परा, आयु आदि की आवृत्ति का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि इन्हीं का प्रभाव चर पर पड़ता है। मध्यवर्ति चर का कारण परिस्थिति का परिवर्तन है तथा इससे ही आश्रित चर का उदय होता है।

Tolman ही वह पहला व्यक्ति था जिसने 'संकेत-गेस्टाल्ट सिद्धान्त' (Sign Gestalt theory) का उल्लेख किया। इस सिद्धान्त का मूल आधार आशा (Expectation) है। Tolman के अनुसार कोई पशु या मानव उसी समय सीखने का प्रयास करता है जब उसे सफलता की आशा हो। इस प्रकार यह सिद्धान्त प्रत्यक्ष ज्ञान (Perception) तथा प्रेरणा (motivation) को ही वर्णित करता है। प्रत्यक्ष ज्ञान को इसने इसलिए शामिल किया क्योंकि आशा में तीन तत्व होते हैं— प्रत्यक्ष ज्ञान, स्मृतिकरण तथा निष्कर्ष। इस प्रकार Tolman ने अपने सिद्धान्त में इस बात पर बल दिया कि सीखने की क्रिया में ऐसी परिस्थितियाँ उपस्थित कर देनी चाहिए जिससे सफलता का संकेत प्राप्त हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि Tolman का सिद्धान्त व्यवहारवादी मनोविज्ञान से बिल्कुल भिन्न था परन्तु फिर भी वे व्यवहारवादी थे क्योंकि उन्होंने अपने सिद्धान्त में व्यवहार का ही वर्णन किया है और Watson के व्यवहारवाद, Pavlov के प्रतिबद्धता सिद्धान्त को Thorndike के प्रभाव नियम, McDougall के सोद्देश्यवाद, Lewin के गेस्टाल्ट

सिद्धान्त को अविकसित मनोविज्ञान एक नई वस्तु इसके समक्ष प्रस्तुत की। अंत में, जैसा कि Woodworth and Sheehan ने लिखा है कि "यह मानना होगा कि Tolman अन्य व्यवहारवादियों की तुलना में संकुल का नकारवादी था। वे सभी सम्प्रदायों के प्रति सुग्राह्य दिमाग रखते थे और (कार्यात्मवाद) के विरोधी गेस्टाल्टवाद तथा मनोविश्लेषणवाद जैसे सम्प्रदाय के प्रत्ययों का भी उपयोग कर लेते थे।"

27/5/2020